सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

सितम्बर - अक्तूबर, २००१

'चौकसी'

' हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा, मेरे होठों के द्वार की चौकसी कर। भजन संहिता (१४१-३)'

यह कितनी अद्‌भुत प्रार्थना है। यदि तुम अपने मुँह की चौकसी करो, तब तुम अपने आप को बहुत सी मुसीबतों से बचाओगे। कर्कश वचन मत बोलो। सोचो, ' क्या यह वचन प्रभु को प्रसन्न करेगा? यदि नहीं, तो उसे मत बोलो। ' हे यहोवा मेरे मुँह पर पहरा बैठा।' यह कितना आवश्यक है।

हमें पहरुओं की भाँति अपनी चीजों की रखवाली करनी है, अपने घरों की चौकसी करनी है। लेकिन कौन हमारी जीभ पर पहरा देगा कि हम उसके द्वारा पाप न करें? देखा गया है कि जब कुछ लोग आपस में मिलते हैं तो व्यर्थ वार्तालाप जारी हो जाता है। कुछ लोग ऐसी बातें करते हैं, जिनका उनसे कोई लेना-देना भी नहीं है। इनसे उनका कोई भी संबंध नहीं है। यह केवल उनके आत्मिक जीवन की नाश करता है और जो उनके आसपास हैं उनकी आत्मिकता का भी नाश करता है।

जब भी आप दूसरों से बात करो, बात ऐसे आरंभ करनी चाहिए, ' प्रभु मुझे यह सीखा रहा है।' आजकल मैं लोगों को कह रहा हूँ कि प्रभु मुझे दिखा रहा है कि मेरा विश्वास अपर्याप्त है। मेरी यह आवश्यकता मेरे मन का बोझ है। मुझे पूरा विश्वास है कि जब वह ऐसा सुनते हैं तो वे अपने मनों में इससे एक चुनौती अनुभव करते होंगें। परमेश्वर द्वारा दिखाई गई मेरी ज़रूरतें, दूसरों के लिए आशिष बनेंगीं। हमारे बीच इस प्रकार का वार्तालाप होना चाहिए।

यदि हम ऐसी ही बातें करते रहें, कि हम क्या सोचते हैं, हमने क्या सुना और किसी ने क्या कहा, यह बहुत खतरनाक है। शब्दों पर ध्यान न देने के कारण संजीवन की आत्मा हमसे दूर हो रही है।

' मेरे हृदय को किसी भी बुराई की ओर न झुकने दे, मैं अधर्मियों के साथ दुष्टता के कार्य में न लगने पाऊँ, और मैं उनके स्वादिष्ट भोजन-वस्तुओं में से न खाऊँ।' भजन संहिता(१४-१४)। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि एक अच्छा रात्रिभोज हमारी ज़बान को अनियंत्रित कर देता है। कुछ लोग आदतानुसार प्रचारकों को अपने घर भोजन निमंत्रण देते रहते हैं। वे लगातार निमत्रण देते रहते हैं कि अन्त में यह कुछ प्रचारकों की दुर्बलता बन जाता है। यदि वे अपने शब्दों की चौकसी न करें तो उस परिवार पर आशिष बनने के स्थान पर शाप बन जाते हैं। वे अपने पीछे ऐसे कुछ वचन और सलाहें छोड़ जाते हैं जो नकारात्मक हैं।

हमें ऐसे वचन कहने चाहिएं जो सुनने वाले का आध्यात्मिक विकास करें। अन्यथा, बेहतर है कि शांत रहें। कुछ लोग अपने हृदय को नकारात्मक बना देते हैं। जितनी अधिक बुराई आप हृदय में बसाओगे, उतनी ही तुम्हारी आत्मा परमेश्वर से अलग और दूर होती जाएगी।

धर्मी मुझे मारे तो यह दया होगी और मेरी ताड़ना करे तो यह मेरे सिर पर तेल होगा .... भजन संहिता(१४१-५)।

समय बीतते हुए मैंने कई लोगों में यह बदलाव देखा है। आत्मा का पतन ऐसी स्थिति पर पहुँचता है कि हर प्रकार के सुधार पर नाराज़गी पैदा होती है और इसके बाद उनका पतन बहुत शीघ्रता से होता है। वे ऐसी अवस्था में आ जाते हैं कि वे कोई सुधार नहीं चाहते। यह बहुत खतरनाक संकेत है। इस समय से उनके आत्मिक जीवन का अन्त हो जाता है और विचित्र आत्माएँ उन्हे जकड़ लेती हैं। मैंने ऐसे लोगों को ऐसी अवस्था में देखा है जिनका परमेश्वर ने उपयोग किया था और बाद में मुँह के बल गिर जाते हैं। अत्यंत सावधान रहो।

धर्मी की ताड़ना एक बहुमूल्य मरहम है। जब कभी यह ताड़ना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जाती है तो यह तुम्हारे आत्मिक मार्ग की ढलान है। *'हे भाइयों, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि इस उपदेश के वचन को धीरज से सुन लो.....' इब्रानियों(१३-२२)।* इस उपदेश के वचन को अपना लो। उनके लिए जो ताड़ना नहीं चाहते यह कितनी भयंकर बात है, जो अनुशासन नहीं चाहते, जो सुखद कार्य चाहते हैं और ऐसा जिसमें उन्हें महत्व मिले। एक सच्चा आत्मिक व्यक्ति कभी भी अपने महत्व की खोज नहीं करता। ' महत्व ' एक प्रकार का आत्मिक नाश है - इसे पाने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर की महिमा हो यही आवश्यक है। हमारा आत्मिक अनुशासन आवश्यक है। लोग आपने ही सम्मान की सोचें आवश्यक नहीं।

परमेश्वर के जनों की फटकार एक बहुमूल्य मरहम है। मैं कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति को फटकारना नहीं चाहता जो फटकार न पसंद करे। ऐसे को डाँटना जो डाँट न चाहे बहुत ही अप्रिय कार्य है। यह ऐसा है कि ऐसे व्यक्ति का इलाज करना चाहें जो दवाई न खाना चाहे। ऐसा कर पाना लगभग असंभव है। जब एक व्यक्ति ऐसी अवस्था में पहुँचता है तो वह परमेश्वर की आत्मा से बहुत दूर जा चुका होता है। आओ परमेश्वर की आत्मा से दूर न जाएं। यह तुम्हारी आत्मिक प्रगति के लिए निर्णायक है। यदि तुम इसे खो बैठोगे तो तुम नष्ट हो जाओगे। हे परमेश्वर हमारी सहायता कर।

- जोशुआ दानियल।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE
By Email:
lefipost@mailandnews.com
At our Web Site:
http://lefi.org

'एक किशोरावस्था की विजय'

' तीन नौजवानों की मृत्यु, ३ कार दुर्घटना में तीन घायल', पाम स्परिंग(स्थान का नाम), जून ६। इस दोपहर तीन नौजवान मारे गए और अन्य तीन त्रिकोणिय आमने-सामने की कार टक्कर में घायल हुए, यह दुर्घटना मुख्यमार्ग-१११, इस पर्यटन मरूस्थलिय शहर के उत्तरी छोर पर घटी। मृतकों में

‘आत्महत्या ’ शैतान का, पराजय का महाद्वार है, परन्तु विजय और स्वतन्त्रता का ‘द्वार’ मसीह ही है।

राबर्ट जोसलिन... उसकी यात्री - कैरन रूथ जोनसन १७ वर्षीय ...’ इन शब्दों के साथ ‘लास एन्जलिस टाइम्स ’ के संवाददाता ने अखबार के मुख्य पृष्ठ पर खबर इस फैले हुए लास एन्जलैस शहर पर उजागर की कि एक भयंकर दुर्घटना निकटीय पाम स्परिंग में घटी।

तीन नौजवान अपने नवयौवन में ही मारे गये और चौथा भी शीघ्र ही दुर्घटना में लगे घावों के कारण मर गया।

यह संवाददाता इस बात को नहीं जानता था कि कैरन जोनसन का परिवार एक पुस्तिका प्रकाशित करेगा, जिसकी व्याख्या, इस निश्चित दुर्घटना, की मानवीय दृष्टिकोण में ऐसे करेगा ‘ एक किशोरावस्था की विजय’। इस पुस्तिका की लगभग १०००,००० प्रतियाँ, बारह विभिन्न भाषाओं में अब तक बाँटी जा चुकी हैं।

‘ विजय ? ‘

ऐसा कैसे हो सकता है कि एक शोकमय परिवार अपने एक प्रिय परिजन की आकस्मिक मृत्यु को इस दृष्टिकोण से देखे। और इस परिवार का यह विश्वास कि मृत्यु भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती।

‘ समर्पित ‘

दूसरे मसीह माता-पिताओं की भाँति एडव्रड जोनसन और जोयस जोनसन ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री को परमेश्वर को समर्पित करने का निर्णय लिया। एक रविवार की सुबह वे शिकागो शहर की ‘मूडी मैमोरियल चर्च ’ गये, जहाँ समर्पण अराधना सभा में पादरी ‘ हैरी आयर्नसाइड ’ ने प्रार्थना की कि प्रभु इस नन्हीं बालिका को आशिषित करें। जोनसन परिवार के लिये यह रिवाज़ मात्र नहीं था। वे यह विश्वास करते थे कि प्रभु ने ‘कैरन रूथ’ को एक उपहार के रूप में उन्हें दिया है। कैरन पर परमेश्वर का अधिकार था, उनका नहीं। इस बात को पक्का करने के लिये कि आगे चल कर कैरन इस बात को समभे कि वह प्रभु को समर्पित है, एड जोनसन ने इस सभा कि रिकार्डिंग भी की।

बचपन से ही कैरन उत्साही थी। उसे खेलना बहुत प्रिय था। उसे अपने माता-पिता से पवित्र बाईबल की कहानियाँ सुनना बहुत भाता था। एक शाम जब वह पाँच वर्ष की थी, उसने अपनी माँ से कहा, ‘ मैं अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करना चाहती हूँ।’ उसने धरती पर घुटने टेके और प्रभु यीशु को अपने मन में आने के लिए आमंत्रित किया।

‘तीन घर’

अधिक समय न बीता था, जोनसन परिवार अपने ग्रीष्मकाल के घर, ‘बैथनी बीच’(स्थान का नाम), मिशिगन राज्य (अमेरिका) के निकट से गुज़र रहे थे, कैरन कार की पिछली सीट पर बैठी थी,अचानक वह खुश होते हुए बोली, ‘ पापा, आप जानते है हमारे तीन घर हैं?’ अचम्भित होते हुए उसके माता-पिता में से एक ने अपनी पाँच वर्षीय बच्ची की ओर मुड़ कर देखा और पूछा, ‘ इसका क्या अर्थ है, कैरन? ’ उसने उत्तर दिया, ‘ हमारा एक घर इलीनोय राज्य (अमेरिका) में है, एक घर मिशिगन राज्य में और एक घर स्वर्ग में।’ उसके पिता को यह घटना अपने जीवन के आने वाले वर्षों में स्पष्ट याद रही।

कैरन जोनसन एक विशिष्ट व्यक्ति थी। उसके मित्रगण, लड़के और लड़कियाँ, उसे हमेशा बहुत ही नम्र और दूसरों की सहायता के लिए तत्पर पाते थे। जब वह हाई स्कूल पास करने वाली थी, उन्होंने उसे अश्चर्य में डालने के लिए एक पार्टी का आयोजन किया। ‘ सान मारीनो हाई स्कूल’ में, उसके सहपाठी उसकी हार्दिकता और सौम्यता से इतने प्रभावित थे कि उन्होने उसे वरिष्ठों की वार्षिक पुस्तिका में ‘ बहुमुल्य मोती ’ की व्याख्या दी।

ऐसा क्या था जिसके कारण वह विशिष्ट थी? उसमें ऐसा क्या था जिसने उसे सैंकड़ों लोगों का आकर्षण बना दिया? ऐसा अनुभव होता है कि कैरन की मृत्यु उपरांत ही हम अनुभूति करने लगे हैं कि उसका प्रेम अपने उद्धारकर्ता की ओर कितना गहरा था। वह यीशु को इतना जानती थी कि इसने उसके किशोर मित्रों से संबंध को पूर्ण रूप ने नया बना दिया।

४ जून १९५९ को गुरूवार के दिन कैरन ने अपने स्कूल, ‘ सान मारिनो हाई स्कूल ‘, से मिले गृहकार्य को पूरा कर लिया था। ५ जून १९५९ शुक्रवार को उसने अपने अध्यापक को गृहकार्य सौंप दिया। ६ जून १९५९ शनिवार के दिन, कैरन के शारीरिक जीवन का मोटरों की क्षण-भर की आमने-सामने की टक्कर की दुर्घटना में अन्त हो गया।

इस दुर्घटना के बाद ही उनके पड़ोस की लड़की ने जोनसन परिवार को याद दिलाया कि कैरन ने अपने स्कूल से मिले कार्य को स्कूल नें जमा करा दिया था। ‘सान मारिनो स्कूल ’ के प्रधानाचार्य ने उसे खोजा और उसके माता-पिता को सौंप दिया। जोनसन परिवार ने उसे पहले कभी नहीं पढ़ा था। कैरन ने यह अपने हाई स्कूल की अंतिम परीक्षा के लिये लिखा था। इस
पत्र ने उसके प्रभु यीशु की ओर अगाध प्रेम को उजागर कर दिया।

कैरन का ‘जीवन का तत्वज्ञान ’ इस प्रकार आरंभ होता है ..’ मेरी जीवन के विषय में मान्यता पवित्र बाईबल और परमेश्वर पर आधारित है, जिसे परमेश्वर ने स्वंय लिखा है। मैं जानती हूँ कि मेरे जीवन के लिये परमेश्वर की एक योजना है और दैनिक प्रार्थना और उसके वचन को पढ़ने के द्वारा मैं उसे जान सकूंगीं। जहाँ तक कि मेरे जीवन के कार्य या जीवन साथी का संबंध है, मैं इस निर्णय को परमेश्वर के हाथ में सौंप चुकी हूँ और जैसा ‘वह’ चाहे मैं करने को तैयार हूँ।

‘मैं समझती हूँ कि यह तत्वज्ञान व्यावहारिक है और इसका अपने दैनिक जीवन में प्रयोग किया जा सकता है। हर निर्णय प्रभु के सम्मुख प्रार्थना में लाया जा सकता है और वह शांति जो यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मानने के कारण मिली है, जिसे बहुत से लोग समझ भी नहीं सकते। कई लोग जीवन के उद्देश्य और कारण की खोज में लगे हैं। मैं जानती हूँ कि मैं इस धरती पर परमेश्वर के साथ सहभागिता और दूसरों को उसके पुत्र यीशु मसीह द्वारा लाये गये उद्धार में जीतने के लिये हूँ। मैं यह जानती हूँ कि मैं मृत्यु के पश्चात हमेशा के लिये ‘उसके’ पास रहने के लिये चली जाऊंगी। ....’

६ जून १९५९ के दिन जब वह मोटर दुर्घटना घटी, कैरन का परिवार अपने हिसपरिय पाम स्परिंग के घर पर आया हुआ था। जब उनका एक मित्र और दूसरे उसके साथ उनके घर के निकट आ रहे थे तो उसने भांप लिया कि कुछ गड़बड़ है। वह अपने केबिन से निकल कर उनसे मिलने के लिये आया और पूछा. ‘ क्या यह कैरन के विषय में है? ’ उनके मित्र ने दुखी होकर सारा वृतांत कह सुनाया कि क्या घटा और पूछा कि क्या वह एड (उसके पिता नाम) की सहायता उसके परिवार को सूचित करने के द्वारा कर सकता है। एड जोनसन ने उसका धन्यवाद दिया और कहा कि इसकी आवश्यकता नहीं है। वह वापस अपने केबिन में आया और अपने परिवार को अपने पास एकत्रित किया। यहाँ तक कि इस भयानक स्थिति में परमेश्वर ने शोक संतप्त पिता को सहारा दिया। एड ने इस प्रकार कहते हुए इस दुर्घटना की सूचना अपने परिवार को दी। ‘इससे पहले कि हम परमेश्वर से यह प्रश्न करें कि उसने कैरन को क्यों बुला लिया। आओ पहले हम उसका धन्यवाद दें कि सतरह साल तक उसने हमें उसका साथ दिया।’

एक पुलिस अधिकारी ने, जो उस दुर्घटना के स्थान पर सबसे पहले पहुँचा था, एड जोनसन को एक ओर बुला कर पूछा, ‘क्या तुम मसीह हो? ’, ‘हाँ’ एड जोनसन ने जवाब दिया। तब आफिसर ने बताया, ‘मैं उसके चेहरे की मुस्कुराहट को कभी नहीं भूल सकता।’

सालों साल जोनसन परिवार ने लोगों से डब्बे भर कर पत्र प्राप्त किये हैं जिन्होंने कैरन के 'जीवन का तत्वज्ञान' पुस्तिका को पढ़ा। कइयों ने यह लिखा कि इस मान्यता को पढ़ने के पश्चात उन्होंने मसीह के पीछे चलने का निर्णय लिया और कई नवजवानों ने इसे पढ़ कर मसीह सेवकाई में भाग लेने का निर्णय लिया। आखिरकार जोनसन परिवार सही निकला। यह वास्तविकता में 'किशोरावस्था की विजय' थी। उनकी पुत्री कैरन अपने तीसरे घर में थी - प्रभु के साथ जिससे वह बेहद प्रेम करती थी।

- चुना गया।

'आत्मा की कोमलता'

हृदय को कोमलता से भरे रखना मसीह पवित्रता का सर्वश्रेष्ठ अंश है, वह मनोहर 'कोमलता', सहानुभूति भरा प्रेम जो कि मसीह स्वरूप बनना चाहता है। आज के संसार में,जहाँ हर समय हमारी भेंट, धोखेबाज, निर्दयी, स्वार्थी और घमंडी लोगों से होती है और लगातार हमारे सहयोगी हमें निराश करते हैं, यह बहुत ही सरल है कि हमारा मन अपने अन्दर, 'निष्ठुरता की आत्मा' या 'कड़वाहट' या 'कुढ़ने का अंशमात्र' उन्हें प्रत्यक्ष रूप से सोख लेता है। लेकिन बदला लेने या कठोरता की अंश मात्र भावना ही हमारे मन की सहानुभूति को कठोर बना देगी और हमारे आंतरिक जीवन में कठोरता और उदासीनता ले आयेगी। दूसरों की निर्दयता और रूखेपन पर विचार-विमर्श करना बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि दूसरों की कपटता के विचार अपने दिमाग में भरने से, शीघ्र ही वह हमारे मन में निवास पा लेंगें। और जल्द ही वह दुष्ट स्वभाव जिसकी निंदा हम दूसरों में करते हैं, स्वंय हमें आ घेरेगें।

पवित्रिकरण पाना और मसीह की शुद्ध करने की सामर्थ का दावा करना ही काफी नहीं है, बल्कि हर क्षण, हर मूल्य पर हमें अपने अधिकार, भावनाएँ, और अपने को नम्र करते हुए, दुष्टता के विचारों से दूर, जो हमें तुच्छ समझते हैं उनके विरूद्ध न बोलकर और सबकुछ सहकर, सारी आशा के साथ, सारी सहनशीलता के साथ समर्पण करें। आत्मा की कोमलता सच्ची संत सुलभता का सार है और मसीह जीवन का आंतरिक व्यक्तिगत चिन्ह है।

आइये, इस कारण ईर्ष्या, मनमुटाव और रूखेपन से सावधान रहें नहीं तो धर्म की नींव विषैली हो जाएगी। अचानक ही हम इस कोमल प्रेम द्वारा नहीं भरे रहेंगें, बल्कि हमें इसे लगातार प्रार्थना का विषय बनाना चाहिए और प्रतिदिन नम्र, परमेश्वर को माननीय, प्रेम भरे विचारों की आदत डालनी चाहिए।

- जी. डी. वाटसन।

'हैनरी मारटिन - परमेश्वर की ओर मुड़कर अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त करता है।'

स्कूली मैदान में जोर का उद्दम मचा हुआ था।

'अन्दर आईये, अन्दर आईये और धमाका सुनिये। प्रवेश-शुल्क - ६ पैसे वरिष्ठ छात्रों से, ३ पैसे कनिष्ठ छात्रों से।'

हमफ्री डैवी (एक छात्र का नाम) कोने में एक शेड को पुराने बोर्डों से घेर कर चारदीवारी बनाए हुए था और अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाकर पुकार रहा था। आगे चलकर वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक बना। जिसने कोयले की खानों के लिए लालटेन का आविष्कार किया। अभी से उसने बारूद बनाना सीख लिया था, जो जोर के धमाके के साथ फटता था और इसके द्वारा वह बड़ी पैसों की कमाई कर रहा था।

हैनरी मारटिन इन धमाको को देखने के लिए तीन पैसे लिए भीड़ की धक्का-मुक्की में आगे बढ़ रहा था, अचानक एक बड़े शैतान लड़के ने धक्का दिया और हैनरी के हाथ से ३ पैसे गिर गये, और वह हैनरी से आगे निकलने लगा। हैनरी गुस्से में आकर अपने होश खो बैठा। वह हमेशा बहुत जल्द क्रोधित हो जाता था। हालाँकि वह कद में उस लड़के से काफी छोटा था, लेकिन उसने अपने शरीर से पूरा दम लगाकर उसे टक्कर मारी, उसे धरती पर गिराया और दनादन उसकी नाक पर घूंसे जड़ने लगा।

'जाने दे' कैम्पथोर्न, एक वरिष्ठ छात्र , हैनरी को खींचते हुए चिल्लाया। ' तुम एक छोटे से आतंक हो, मारटिन। ज़रा धीरज़ धरो।'

अचानक उस शैड में जोर का धमाका हुआ, वैज्ञानिक के अनुमान से बढ़कर जोरदार और जल्द। फट्टे भीड़ पर आ पड़े, जो धूंए के आंवरण से संघर्ष कर रही थी। हमफ्री डैवी, झुलसे हुए बालों के साथ, लड़खड़ा कर आँखे मलते हुए झोपड़ी से निकल रहा था कि धमाका सुनकर वहाँ हड़बड़ी में पहुचें हेडमास्टर से जा टकराया।

'तुम डैवी, फिर दोबारा?', तुम्हें एक हज़ार लाइने लिखने का दण्ड, अभी इसी समय मेरे कमरे में जाओ। मारटिन, तुमने फिर झगड़ा किया? मेरे कमरे में पहुँचो। पाँच सौ लाइने लिखने का दण्ड, हरेक छात्र को, जो भी यहाँ पर है। कैम्पथोर्न, तुम्हें यहाँ देखकर मुझे आश्चर्य है.'

हैड मास्टर के कमरे में बड़ी कष्टपूर्ण बातचीत के पश्चात, मारटिन को कैम्पथोर्न को सौंप दिया गया कि वह उसे सही तरीके से पेश आना

Free On-Line
subscription
Would you like an On-Line subscription to the ***"Christ is Victor"***?
Please visit our web site at:
LEFI.org.

सत्य की परख

गिनती (३२-२३) - 'निश्चय ही तुम्हारा पाप तुम्हें खोज निकालेगा।' !

सिखाये।

'थकावट महसूस कर रहे हो?' कैम्पथोर्न ने उससे कहा, 'यदि थोड़ी देर न बैठो तो शायद कुछ आराम महसूस करोगे।'

'उस शैतान लड़के को मुझे ज़रूर कुछ और देना बाकी है।'

'यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो इसे भूल चुका होता। क्या तुम जानते हो कि तुम अपनी गलती के कारण ही इस समस्या में पड़ते हो। लड़के जानते हैं कि तुम क्रोध में अपना संतुलन खो बैठते हो, इसी कारण वे तुम्हें और अधिक चिढ़ाते हैं। यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता, तो धैर्य रखना सीख जाता। अपने क्रोध को काबू में रखो।'

हैनरी मारटिन उन शब्दों को कभी नहीं भूला। यह पाठ सीखना बहुत ही मुश्किल था, क्योंकि उसमें बहुत ही कम धैर्य था। लेकिन जब तक वह कैम्ब्रिज विद्यालय में पहुँचा और घुड़सवारी, मुक्केबाजी और तीरंदीजी सीख चुका था, वह एक मिलनसार लड़का जाना जाने लगा, जो जल्द ही क्रोधित नहीं होता था।

कालेज में, उसे सारे विषयों में से गणित से सबसे अधिक घृणा थी। प्रश्नों को देखकर वह झुंझला उठा, घृणा से भरकर उसने किताबें एक ओर फेंकी और विश्वविद्यालय में आगे पढ़ने की बजाय छोड़ने की ठान ली। एक वरिष्ठ विद्यार्थी को उससे मिलने के लिए भेजा कि उससे बात करे।

'मारटिन, क्या मैं किसी प्रकार से तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ?' इस व्यक्ति ने धीमे से पूछा।

'धन्यवाद, कोई भी मेरी कुछ सहायता नहीं कर सकता। मेरा गणित से मन फिर गया है और यहाँ इसके बिना कोई कुछ काम का नहीं है।'

'मैंने भी ऐसा अनुभव किया था, जब मैं पहले यहाँ पहुँचा था, लेकिन वह लेटिन भाषा का विषय था जिसने मुझे चित कर दिया था। हम सभी का कोई एक ऐसा विषय होता है जिससे हम बाकी सारे विषयों से अधिक घृणा करते हैं। लेकिन महान बात यह है कि धीरज धरो और धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहो।'

' देखो, क्या तुम भी कैम्पथोर्न से प्रभावित हुए हो?, वही है जो हमेशा ऐसे ही कहता है।'

' मैं कैम्पथोर्न से अच्छे से परिचित नहीं हूँ और मैं आजकल उससे नहीं मिला हूँ। जो मैं कह रहा हूँ, वह सामान्य समझ की बात है। यदि कोई विषय मुश्किल है तो इस कारण अपने संतुलन खोने और घबराने से क्या लाभ है? शात रहो, अपनी ओर से अच्छा करो और फल अपनी चिंता स्वंय करेगा।'

' गणित मेरे पिता का सर्वप्रिय विषय है। '

' उन्हें यह समझने दो कि सारी बुद्धि उन्हीं के परिवार में नहीं भरी है. '

किताबों को अलग रखने की बजाय, मारटिन ने चुपचाप इस डरावने विषय पर काम आरंभ कर दिया। क्रिसमस की परीक्षा में, उसे यह जानकर अचंभा हुआ कि उसने पहला स्थान प्राप्त किया है। उसके पिता को भी इस पर आश्चर्य हुआ और जल्दी से उन्होंने इसकी बधाई भेजी।

दुर्भाग्यवश, सर्दी के समय घोड़ा-गाड़ी द्वारा घर (कार्नवाल कस्बा) की यात्रा बहुत लम्बी थी, इस कारण मारटिन ने क्रिसमस का त्यौहार अपने दोस्तों के साथ मनाया। वह ईस्टर के त्यौहार पर घर जाने की आस लगाए था। अपने पिता से फिर मिलकर और उनके चेहरे पर आश्चर्य तथा खुशी देखकर उसे बहुत हर्ष होगा। हैनरी ने गणित विषय में पहला स्थान प्राप्त किया है। उसके पिता उससे हाथ मिलाकर उसका अभिवादन करेगें और सारे गांव में इसकी बड़ाई करेगें। ' मेरा बेटा, अच्छे से पढ़ रहा है, गणित में होशियार, क्या आप जानते है।' इस वृद्ध के लिए यह समाचार इतना महत्वपूर्ण होगा जितना एडमिरल नेलसन द्वारा फ्रांस को हराने का।

नये साल के आरंभ में, ईस्टर से बहुत पहले, मारटिन के पास शब्द पहुँचे कि उसके पिता का देहान्त हो गया है।

वह करारी चोट थी। अब मेहनत करने और ईनाम जीतने का क्या लाभ है? इस जीवन का क्या फायदा जब उसका अंत इतना शीघ्र हो जाता है और वह भी इतना दुखद? मारटिन अब समझना चाहता था, गणित नहीं बल्कि स्वंय जीवन। इसका क्या उद्देश्य है? उसे पूरा विश्वास था कि इस विषय में केवल एक ही पुस्तक थी जो उसे कुछ बता सकती थी, वह थी बाईबल। उसने इसे पढ़ना आरंभ कर दिया लेकिन पौलुस द्वारा लिखी पत्रियों को सरल पाने की बजाय बहुत मुश्किल पाया।

' तुम सुसमाचार से आरंभ क्यों नही करते? कैम्पथोर्न ने पूछा, जो उससे मिलने आया था। ' और हाँ, क्या तुमने कभी प्रार्थना ही है? '

कैम्पथोर्न का चेहरा लाल था, क्योंकि इस विषय पर एक मित्र से बात करना इतना सरल नहीं था। केवल मारटिन का उसके पिता के लिए दुख ही था जिस कारण उसने ऐसा कहा।

' प्रार्थना का तो मुझे कभी लाभ नहीं पहुँचा,' मारटिन ने अपने पुराने अधीरता के अंदाज़ में कहा।

' निश्चिंत होकर धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहो। मुझे यह अपेक्षा है कि प्रार्थना के अभ्यास की उतनी ही आवश्यकता है जैसे किसी और काम की। मुझे केवल यही कहना है, अच्छा आज्ञा चाहता हूँ।'

मारटिन न तो पत्रियाँ और न ही लम्बे-लम्बे उपदेश समझ सका, जो उसने सुने। परन्तु उसने प्रार्थना करना आरंभ कर दिया। जल्द ही उसे यह अनुभव होने लगा कि कोई उसकी प्रार्थना सुन रहा है। वह उद्धार की लम्बी-लम्बी बातें नहीं समझ सका जो कि उस समय प्रचलित थीं, लेकिन जल्द ही उसने उससे बेहतर को जान लिया। उसने यह खोज लिया कि मसीह जीवित है।

जैसे पहले वह अपने पिता की खुशी के लिए कार्य करता था और सहायता के लिए उस पर निर्भर रहता था, इस प्रकार वह अब मसीह के लिए जीने और कार्य करने लगा। और उसने (यीशु मसीह ने) उसकी सहायता की। और मारटिन कैम्ब्रिज में उस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाशाली छात्र ठहरा।

इस समय वह 'सेंट जोन्स' का स्दस्य बना, ऐसा हुआ कि उसने अमेरिका मूल के लोगों के बीच की एक साहस की कहानी को सुना। डेविड ब्रेन्ड - वह वीर था। मारटिन ने इसके विषय में एक मित्र से बातचीत की।

'ब्रेन्ड कितना महान व्यक्ति होगा,' उसने कहा 'मैं आजकल उसके द्वारा अमेरिकी मूल वासियों (रेड इंडियन) के बीच किये गये कार्यों का वर्णन पढ़ रहा हूँ। उन्हें जंगली जानवरों की भाँति मार गिराने की बजाय वह एक शिक्षक बन कर उनके बीच रहा। उन्होने उसकी खाल उधेड़ने की कोई कोशिश नहीं की, जबकि सामान्य तौर पर जब भी उन्हें मौका लगता वह किसी भी गोरे व्यक्ति को पकड़ने पर उसकी ताड़ना करते थे। वे जानते थे कि वह उनका मित्र है। ज़रूर उन्हें चट्टान के पीछे छिप कर मारने की बजाय, बिना हथियार के उनके बीच जाना अधिक साहसी कार्य है। मेरे विचार से ब्रेन्ड परमेश्वर के वीरों में से एक है।'

'तुम ठीक कहते हो,' दूसरे ने उत्तर दिया, जोकि वैसली (जान वैसली) के आदमियों में से एक था, 'क्यों नहीं, तुम भी जाकर वैसा ही कार्य करते?'

प्रतिभाशाली विश्वविद्यालय का पुरूष ठिठका, फिर बोला, उसकी आंखों मे रूचि झलक रही थी, 'मैं तो एकदम जाने को तैयार हूँ, लेकिन अभी-अभी अमेरिका में आंदोलन छिड़ा है और वह अब ब्रिटेन की कालोनी नहीं रही।'

'भारत क्यों नहीं? मैं एक आदमी को जानता हूँ, चार्ल्स ग्रान्ट, जो एक ऐसा आदमी चाहता है। जो भारत में वही कार्य करे जैसा ब्रेन्ड ने अनेरिका में किया। भारत में अभी कुछ मिश्नरी हैं लेकिन औरों की आवश्यकता है। विलियम कैरी भी वहाँ है, एक महान व्यक्ति और एक महान मिश्नरी। तुम क्यों नहीं उसके साथ काम करते?'

'मैने पहले ही चर्च मिश्नरी सोसायटी को हाँ कर दी है।'

'क्या। तो तुम पहले ब्रिटिश व्यक्ति हो जिसने इस सोसायटी की सदस्यता ली है। यह केवल तीन वर्ष पहले बनी है और मैंने सुना है कि

इन्हें केवल कुछ ही विदेशियों से सेवा का निमन्त्रण मिला है।'

'तो मुझे अब पता चला कि मैं नहीं जा सकता,' मारटिन ने उदासी से कहा, 'मिश्नरियों को केवल दस शिलिंग साप्ताहिक वेतन मिलता है। मुझे इसका पहले से ज्ञान था और मैं पूरे मन से तैयार था। लेकिन मेरी बहिन अपनी छोटी सी आमदनी भी खो बैठी है और अब मुझे ही उसका निर्वाह करना है।'

'तुम्हें श्रीमान चार्ल्स ग्रांट से ज़रूर मिलना चाहिए। वह ईस्ट इंडिया कम्पनी का निदेशक है। क्या तुम विश्वविद्यालय में अपने पद मे त्यागपत्र देने को तैयार हो?'

'हाँ, मैंने पहले से ही बांग्ला और फारसी भाषा सीखनी आरंभ कर दी है।'

'तब तो तुम्हें श्रीमान ग्रांट से ज़रूर मिलना चाहिए। भूलना मत उनका नाम है ' चार्ल्स ग्रांट, ईस्ट इंडिया कम्पनी के निदेशक और लंदन के जाने माने लोगों में से एक। तुम उन्हे ज़रूर पसंद करोगे। जितनों को मैं जानता हूँ उनमें से वह सबसे अधिक चरित्रवान है।' हैनरी मारटिन चाहता तो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद प्राप्त कर लेता और अपने बाकी के दिन शांति और सुरक्षा में बिता देता।

उसने अपने विश्वविद्यालय के पद से त्यागपत्र देकर सबको अचंभे में डाल दिया, इसलिए कि वह परदेश में वैसे ही कार्य करे जैसे डेविड ब्रेनर्ड मे अमेरिकी मूलवासियों के बीच किया था। एक दिन वह ईस्ट इंडिया कम्पनी के मुख्यालय में पहुँचा और श्रीमान चार्ल्स ग्रांट से भेंट की विनती की।

एक लम्बी टांगों और खोखले मुँह वाले व्यक्ति ने उसका अभिवादन किया। तीक्ष्ण आँखों ने उसका उपर मे नीचे तक का मुआयना किया।

'श्रीमान, मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ?' उस प्रतिष्ठित व्यक्ति ने पूछा।

'मैं एक मसीह शिक्षक बन कर विदेश जाना चाहता हूँ - भारत में, यदि संभव हो।'

'क्यों नहीं, जा सकते हो। विलियम कैरी आजकल वहाँ है, दूसरे लगभग आधा दर्जन लोगों के साथ। वे तुम्हारी सहायता पा कर प्रसन्न होंगें।'

'श्रीमान, जैसा आप जानते हैं, विलियम कैरी एक मिश्नरी हैं और ब्रतानिया सरकार आजकल इस हक में नहीं है कि मिश्नरी वहाँ के मूल निवासियों को शिक्षा दें। उन्हें इस कारण डेन्मार्क के जहाज़ पर यात्रा करनी पड़ी। उन्हें कोई वेतन नहीं मिलता, केवल थोड़ा बहुत जीवन निर्वाह के लायक मिश्नरी सोसायटी देती है। मैं ऐसा नही कर सकता। मैं ईस्ट इंडिया कम्पनी का पादरी बन कर जा सकता हूँ।'

'तुम एक पादरी बन कर जाना चाहते हो और एक सरकारी वेतन के साथ?'

मारटिन का चेहरा शर्म से लाल हो गया। 'मेरी एक बहिन है जिसकी देखभाल की जिम्मेवारी मेरी है, श्रीमान। मैं उसे निराश्रय छोड़ कर नहीं जा सकता। लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बची-खुची पूंजी खो बैठी, मैं मिश्नरी सोसायटी को स्वेच्छा से सेवा का वचन दे चुका था।'

'तो घर क्यों नहीं रुक जाते? क्या आप कृपया मुझे यह बताएंगें कि आप विदेश एक मसीह शिक्षक बनकर क्यों जाना चाहते हैं?'

'क्योंकि मैं यह पूर्ण विश्वास रखता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह ने हमें सारे संसार के प्राणियों को सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी है,' मारटिन ने सीधे से जवाब दिया।

'सत्य तुम पर प्रकट हो रहा है, श्रीमान मारटिन। तुमसे यह सुनकर मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ। मैं कई सालों से चर्च और राज्य के पीछे पड़ा हूँ, यह समझाने के लिये कि हमारा धर्म छोटी सी चीज़ नहीं है कि इसे अपने तक सीमित रखें। यह ऐसी खुशी है जो हम दूसरों से बाँटें, एक जीवन रीति जो हमें दूसरों को सिखानी चाहिए। केवल यही मार्ग है।'

'मैं यह सीख चुका हूँ।'

'यह सीखने में मुझे लम्बा समय लगा। श्रीमान मारटिन, अपने विषय में बोलने के लिए मुझे क्षमा करना। वर्षों पहले, मैं भारत में धन कमाने गया था। स्काटलैण्ड में तो मैं एक गरीब बालक था, लेकिन वहाँ पर मैं एक मिथ्या-देवता के समान हो गया। मेरा दिमाग घमंड से भरा था। दर्जनों सेवक मेरी और मेरी पत्नी की बाट जोहते थे। मैं कहीं पैदल चलकर नहीं जाता था। चार वाहक मेरी कुर्सी उठाकर चलते थे। यदि मैं नौकर से खुश नहीं होता तो उनकी पिटाई करने से पीछे नहीं हटता। ऐसा लगता है कि मेरे व्यवहार पर मौसम का प्रभाव था। एक गोरे व्यक्ति के लिए भारत एक अस्वस्थ स्थान है।'

'श्रीमान, मैंने भी ऐसा सुना है।'

'लगभग सौ साल पहले, पीटर मुंडी नामक यात्री, वहाँ के एक मौहल्ले के विषय में लिखता है,' इस शहर के प्रवेश द्वार से कई अंग्रेज़ अन्दर गए हैं जो कभी वापस नहीं लौटे, लगता है कि यह हमारी श्मशान भूमि है। ' कलकत्ता के विषय में आज भी यह सत्य है। वहाँ मैंने अपनी दो बेटियों को गंवाया। चेचक से दोनों एक मास के भीतर मर गईं। '

मारटिन सहानुभूति के साथ बड़बड़ाया, फिर स्काटलैण्ड निवासी का स्वर गंभीर हो गया, 'इसे मुझे सोचने पर मज़बूर कर दिया, मारटिन, और जब एक व्यक्ति सोचने लगता है तो वह परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं है। मैं पैसों का ढेर जुटाने में लगा था, शराब पीना, जुआ खेलना और वहाँ के मूल निवासियों को औज़ारों की भांति प्रयोग में लाना, और पूरा स्वार्थी जीवन बिताना। वह जीवन अत्यधिक दयनीय था। जब प्रभु मसीह ने मुझ से बात की, उसने मुझे दर्शाया कि हमें एक प्रेम भरा जीवन जीना चाहिए। यह ही कारण था जिसने मुझे मिशन की ओर झुकाया। मूलवासियों(भारतीय) से बुरा बर्ताव करने की बजाय मैंने उनसे मित्रों समान बर्ताव करना आरंभ कर दिया। मैंने उनसे सीखना शुरू किया और जो कुछ मैं जानता था उन्हें सिखाना आरंभ कर दिया। एक 'ब्राउन' नामक पादरी, वहाँ पर बिना माता-पिता के ५०० बच्चों की देखभाल कर रहा था। गोरे लोग उन्हें नहीं चाहते था, मूलनिवासी भी उन्हें नहीं चाहते थे। लेकिन मैंने यह समझा कि (प्रभु यीशु) मसीह हम मसीहियों को उनके लिए कुछ करने को कह रहे हैं। लेकिन लंदन, उसे सुनने को तैयार नहीं है। वह चाहता है कि देशीय लोगों की किसी प्रकार की सहायता नहीं होनी चाहिए और न ही उन्हें शिक्षा दी जाए। क्या तुमने कभी सुना है, किस प्रकार हमने राजा के पास संदेश पहुँचाया?'

'मैंने तो केवल अफवाहें सुनी हैं। मैं वह कहानी सुनना चाहूँगा।'

'लंदन पहुँचने के लिए भारत छोड़ने से पहले मैंने ब्राउन को यह वचन दिया था कि जार्ज तृतीय राजा से मिश्नरियों के लिए सभी वर्गों में सेवा के लिए अनुमति प्राप्त करूँगा। मैं कैन्टीबरी के आर्चबिशप से मिला और उन्हें मेरी ओर से बात करने को कहा। यदि यह केवल गरीब चार्ली ग्रांट के लिए होता तो मैं लेम्बथ से धक्के मार कर निकाल दिया जाता। लेकिन आर्चबिशप ईस्ट इंडिया कम्पनी को नाराज़ नहीं करना चाहता था। उसे मिशन की कोई परवाह नहीं थी, लेकिन थोड़ा जोर देने के बाद, अपना बैंजनी कोट और टोपी पहनकर सुनवाई के लिए रवाना हुआ। जार्ज तृतीय की सालाना दस लाख पाउंड की आमदनी है. उसने २८,००० में बकिंघम घर खरीदा और उसे महल बनाने की सोची। दस शीलिंग दर सप्ताह कुछ मिश्नरियों के लिए अनुमति माँगना कोई अधिक बड़ा नहीं लगा। हम राजा से पैसा नहीं माँग रहे थे। हमें पता था, वह कोड़ी भी नहीं देगा। हमें सिर्फ उसकी अनुमति चाहिए थी।

'यह तो कोई अधिक नहीं जान पड़ता था,' हैनरी ने कहा।

'अरे, आर्चबिशप ने प्रवेश किया, घुटने टेके और राजा के हाथ को चूमा और अपनी विनती कही। लेकिन राजा पहले से चिड़ा हुआ था। वेल्स का राजकुमार एक साधारण स्त्री से विवाह करने के लिए भाग खड़ा हुआ था, रिचमंड हिल की प्यारी लास।'

'क्या वह आर्चबिशप की भी नहीं सुनेगा?'

'किसने तुम्हारे दिमाग में यह पागलों वाला विचार डाल दिया है?', उसने पूछा।

आर्चबिशप ने कहा कि वह स्काटलैण्डवासी चार्ल्स ग्रांट है। राजा गुस्से में भड़क उठा, 'एक और, स्काटलैण्ड का परेशान करने वाला। एक है, राबर्ट बर्न्स जो हमारे विषय में कविताएँ लिखता है। वह राजकुमार और तुम्हें, डा मूर निशाना बनाकर ताने कसता है और तुम दोनों उस लायक हो. लेकिन यह आदमी इतनी हिमाकत करता है कि हमारे विषय में ऐसा लिखे। और अब तुम एक और स्काटलैण्डवासी को साथ लाये हो, तुम दोनों पर एक विपत्ति।' इसके साथ ही बातचीत का अंत हो गया। हमें तो अब बिना चर्च और राज्य की सहायता के ही आगे बढ़ना होगा. लेकिन हम आगे बढेंगें। ग्रांट परिवार का सिद्धांत है 'डटे रहो' । मैं इस बात पर डटा हूँ कि मसीहियत सारे संसार में सिखाई जाए। यही कारण है कि तुम्हें देखकर मैं खास प्रसन्न हूँ। तुम मेरे साथ ज़रूर आओ और रात्रि भोज करो।'

'व्यापारी के घर में मारटिन कई महारथियों से मिला, विलबर फोर्स, जो गुलामी का अंत करने पर जुटा था, ग्रेविल शार्प, जिसने अमेरिका में बहुत कुछ किया था और रिचर्ड जोनसन, जो कि 'बोटनी बै' में कैदियों का पादरी बनने जा रहा था। '

'यह सभी व्यक्ति इतिहास बना रहे हैं,' ग्रांट, मारटिन को फुसफुसाया, जब वह मेज से उठ रहे थे। 'राजा जार्ज को ऐसे पागल होने दो जैसे जंगली व्यवहार वाला और वैल्स के राजकुमार को रंगरलियों मनाने वाला जैसा वह चाहे। उनका कोई महत्व नहीं है। इन जैसे लोग ही कार्य कर रहे हैं. क्या तुमने राबर्ट बर्न्स की कविताएँ पढ़ी हैं? मेरे बालक, तुम्हें ज़रूर उन्हें पढ़ना चाहिए। संसार ऐसे लोगों कि बाट जोह रहा है जो कुछ कर दिखाएँ।'

'मुझे डर है कि मैं कभी ऐसा कुछ नहीं कर पाऊँगा।'

'मैं तुम्हारे लिए पादरी पद का इंतज़ाम करता हूँ। एक दिन संसार हैनरी मारटिन पर गर्व करेगा, जिसने भारत के लिए इतना कुछ किया।'

- ('हैनरी मारटिन' से उद्धरित, लेखक हयू फ प्रेम, प्रकाशन लेमेंन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, १९९३)

'विधवा का विश्वास'

' ..... और बहुत-से धनवान बड़ी-बड़ी रकम डाल रहे थे। इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर तांबे के दो छोटे-छोटे सिक्के डाले जिनका मूल्य लगभग एक पैसे के बराबर होता है।' मरकुस (१२-४१..४४)

यीशु देख रहे थे। ऐसा दिख रहा था जैसे कि धनवान अपने को बधाई देते हुए दानपात्र में पैसा डाल रहे थे। वह इस कृतज्ञता से नहीं दे रहे थे कि परमेश्वर ने उन्हें इस लायक किया कि उसके राज्य के लिए वह दान दे सके। जहाँ तक विधवा का प्रश्न है, गणित के अनुसार, उसने सौ प्रतिशत दिया और वह उन धनी लोगों से अधिक दान था। यह देने वाले के हाथ पर निर्भर नहीं करता लेकिन किस मन से दिया है, उसका अधिक महत्व है। हम परमेश्वर को घूस दे रहे हों, इस प्रकार दान नहीं देना चाहिए।

'परमेश्वर को विधवाओं का खास ध्यान रहता है। वह विधवा का ही तेल था जिसे ऐहल्या, परमेश्वर के जन, ने कई गुणा बढ़ाया। ऐसी विधवा जो टूटे मन की है परमेश्वर को अति स्वीकार्य है।' हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं की व्यथा में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।' याकूब (१-२७)

यहाँ पर इस विधवा में न तो घृणा, न कुड़कुड़ाना और न परमेश्वर के प्रति अविश्वास था। धनी व्यक्ति में दूसरा ही विचार भाव था। उनके धन ने उन्हें आत्मसंतोष में गाड़ दिया था और इस कारण उनकी प्रतिभाएँ नही उभर सकीं। परमेश्वर धनवान व्यक्ति ' में ' बहुलता उसके धन से अधिक देखता है। यह तुम्हारा व्यक्तित्व, जीवन और प्रचार है जिस पर परमेश्वर निर्भर करता है। लेकिन वह विश्वास की आशा करता है। मसीह परिवारों में कितने नौजवान लोगों की जल्द ही मृत्यु हो जाती है. न तो उन्होंने परमेश्वर की परवाह की, न विश्वास करना सीखा और अब वह बिमारी का सामना करने में असमर्थ हैं. उनकी मृत्यु कितनी बड़ी हानि है। धनी व्यक्ति की योग्यता कभी नहीं बढ़ पाती। धनवानों का धन उन्हीं में भरा है और संसार की भलाई के लिए दी गई योग्यताएँ उनमें छिपी रह जाती हैं।

हडसन टेलर और वैसली (जोन वैसली) 'कैसे, उन्होंने अपनी आत्मिक योग्यताओं को बढ़ाया और उससे संसार की भलाई कर, यह सिद्ध कर दिखाया। कितने ही आदमी हैं जो अपने जीवन के मध्य में धनी बने, अब परमेश्वर के राज्य के लिए बेकार हो गए हैं। कईयों ने यह अपने विवाह में पाया और कईयों ने अपनी धुन में कमाया। वह धन था जिस पर उनकी निगाह थी और धन ही था जो उन्होने पाया। हाँ,
यह ज़रूर है कि वह परमेश्वर की देते है। लेकिन वह स्वंय को उसे नहीं समर्पित करते। इस विधवा ने सब कुछ दे दिया।

किसने परमेश्वर के मन को जाना है? क्या तुम जानते हो तुम्हारे लिए उसने कितना दिया है? यदि तुम जान जाओगे तो अपना सबकुछ न्यौछावर कर दोगे। तुम अपने को बिलकुल खाली कर दोगे।' हांडी को खाली कर दो और तेल के पात्र को खाली कर दो', यही एलिहा ने कहा था।' तुम देखोगे वह कैसे दुबारा भर जाएगा।'

परमेश्वर ने नबी को ज़ारेफात की विधवा के पास भेजा। वह मृत्यु को जीवन और दुख को खुशी में बदलने आया था। निराशा तुम्हें हराने न पाए। जब तुम्हारे साधनों का अन्त आ जाता है, वह परमेश्वर का समय है, परमेश्वर के लिए मौका। जब तक तुम्हारे पास सहारा है। तुम उसी पर निर्भर रहते हो और उसी दिशा में ताकते रहते हो। लेकिन जब तुम्हारे पास कोई सहारा नहीं रहता। तब तुम विधवा की भाँति निराशा के स्थान पर पहुँचते हो, विधवा की भाँति टूटे हुए और यही परमेश्वर के लिए अवसर है। विधवा के लिए भविष्य में कुछ नहीं बचा था। लेकिन परमेश्वर ने उसका भविष्य बनाया। परमेश्वर को उसका ध्यान था। जब तुम्हारी सहायता के लिए कोई नहीं है, परमेश्वर तुम्हारी सहायता करेगा।

एक अवसर पर साधु सुन्दर सिंह रेगिस्तान में अपना मार्ग खो बैठा। उस असहायपन में, उसने परमेश्वर को पुकारा। उसे अपने चारों ओर रेत के अलावा कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था। तब वहाँ एक व्यक्ति आया और धीरे से बातें करने लगा, उसकी सारी थकान जाती रही। जल्द ही वह एक गांव के पास पहुँचे और वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। सुन्दर जान गया कि वह एक स्वर्गदूत था।

परमेश्वर के स्वर्गदूत निराश लोगों पर ध्यान लगाए हुए हैं। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं कि कोई भी निराशा में मरे। तुम्हारे लिए परमेश्वर महान विचार रखे हुए है। जब तुम निराशा के समय में पहुँचते हो, तब परमेश्वर की महिमा देखोगे। अपना ह्रदय नम्र रखो। तब तुम परमेश्वर की आशिष देखोगे और वह तुम्हें बढ़ाएगा।
- स्वर्गीय एन दानियल।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।